प्र. 3. जैन मूर्तिकला की यात्रा का वर्णन करें।

Write the journey of Jain Sculpture.

अथवा / OR

जैन गुफाओं की विशेषताओं का वर्णन करें।

Explain the importance of Jain Caves.

प्र. 4. अंगों के नाम बताएं और किन्हीं पाँच का संक्षिप्त परिचय दें।

Write the names of Angas and give an introduction of any five angas.

अथवा / OR

आगमों के व्याख्या साहित्य के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालें।

Throw light on journey of commentary literature of Cannons.

प्र. 5. किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिए–

Write short note on any four-

(i) निर्युक्तियों का संक्षिप्त वर्णन करें / Write a short note on Niryukti's

(ii) हरिभद्र / Haribhadra

(iii) योग साहित्य के प्रमुख गन्थों का वर्णन /
Explain main texts of Yog Literature

(iv) आचार्य कुन्दकुन्द / Acharya Kundakunda

(v) चतुर्याम धर्म / Chaturyam Dharma

(vi) यौगलिक जीवन / Life of Yogalika

♦♦♦

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

DISTANCE EDUCATION EXAMINATION - 2024

M. A. IN JAINOLOGY AND COMPARATIVE RELIGION & PHILOSOPHY

(PREVIOUS YEAR)

PAPER I - JAIN HISTORY, CULTURE, LITERATURE AND ART

TIME : 3.00 HOURS **ROLL NO. .....** **MM : 70**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. भगवान अरिष्टनेमि की ऐतिहासिकता को सिद्ध करते हुए उनके जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिए।

Prove the Lord Aristnemi historically and also throw light on his life philosophy.

अथवा / OR

भगवान् पार्श्व के जीवन को विस्तार से समझाइए।

Explain life sketch of Lord Parshv in detail.

प्र. 2. जैन संस्कृति की विशेषताओं को स्पष्ट करें।

Explain the importance of Jain Culture.

अथवा / OR

जैन पर्व पर निबन्ध लिखिए।

Write an essay on Jain Festivals.

प्र. 3. षड्जीवनिकाय की अवधारणा को समझाइये।

Explain the concept of 'Shadjivanikaya.

अथवा / OR

पञ्चास्तिकाय और उत्तराध्ययनसूत्र इन दोनों ग्रन्थों का परिचय दीजिए।

Give introduction of both books Panchastikaya and Uttaradhyayan Sutra.

प्र. 4. श्रावकाचार पर एक निबन्ध लिखिए।

Write an essay on Shravkachara.

अथवा / OR

जैनाचार विषयक ग्रन्थों का परिचय दीजिए।

Give the introduction of the literature of the Jain Ethics.

प्र. 5. 'षड्आवश्यक' पर एक निबन्ध लिखिए।

Write an essay on 'Shadavashyaka'.

अथवा / OR

'सल्लेखना (संथारा) आत्महत्या नहीं है'। – इस विषय पर जैन दर्शन की दृष्टि से अपने विचार व्यक्त कीजिए।

'Sallekhana (Santhara) is not suicide'. Express your views on this subject from the point of view of Jain Philosophy.

♦♦♦

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

DISTANCE EDUCATION EXAMINATION - 2024

M.A. IN JAINOLOGY AND COMPARATIVE RELIGION & PHILOSOPHY

(PREVIOUS YEAR)

PAPER II - JAIN METAPHYSICS AND ETHICS

TIME : 3.00 HOURS **ROLL NO. .....** **MM : 70**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. 'द्रव्य–गुण और पर्याय' इसकी जैन दृष्टि से व्याख्या कीजिए।

Dravya-Guna and Paryaya explain it from Jain point of view.

अथवा / OR

'जैन दर्शन में सत्ता का स्वरूप' इस विषय पर एक निबन्ध लिखिए।

Write an essay on 'Nature of existance in Jain Philosophy.'

प्र. 2. धर्म और अधर्म द्रव्य की व्याख्या कीजिए।

Explain the Dharma and Adharma Dravya.

अथवा / OR

आकाश और काल द्रव्य की व्याख्या कीजिए।

Explain the Aakash and Kala Dravya.

सालम्बन ध्यान का स्वरूप बताते हुए भेदों को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिये।
Explain the differences in detail by describing the nature of Salamban Dhyan.

प्र. 3. आध्यात्मिक आधार पर प्रेक्षाध्यान पर प्रकाश डालिये।
Throw light on Preksha Dhyana on spiritual basis.

अथवा / OR

अनुप्रेक्षा का स्वरूप बताते हुए भेदों को स्पष्ट कीजिये।
Explain the differences by describing the nature of Anupreksha.

प्र. 4. लेश्या और उसके भेदों का स्वरूप विस्तारपूर्वक समझाइये।
Explain in detail the nature of Leshya and its differences.

अथवा / OR

पतंजलि के अनुसार समाधि का स्वरूप बताते हुए भेदों को स्पष्ट कीजिये।
Explain the types of Samadhi according to Patanjali and explain the differences.

प्र. 5. जैन कर्म-सिद्धान्त की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।
Explain the important features of Jain Karma-Theory.

अथवा / OR

भारतीय दर्शन में कर्म-सिद्धान्त की अवधारणा को सविस्तार स्पष्ट कीजिये।
Explain in detail the concept of Karma-theory in Indian Philosophy.

♦♦♦

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

DISTANCE EDUCATION EXAMINATION - 2024

M.A. IN JAINOLOGY AND COMPARATIVE RELIGION & PHILOSOPHY

(PREVIOUS YEAR)

PAPER III - JAIN THEORY OF DHYANA, YOGA AND KARMA

TIME : 3.00 HOURS **ROLL NO. .....** **MM : 70**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. आचार्य हरिभद्रसूरि की दृष्टि में योग के स्वरूप को सविस्तार समझाइये।
Explain in detail the nature of yoga in the view of Acharya Haribhadrasuri.

अथवा / OR

गुणस्थान के आधार पर आध्यात्मिक विकास की आठ दृष्टियों का वर्णन कीजिये।
Describe eight views of spiritual development on the basis of Gunasthan.

प्र. 2. धर्म्यध्यान का स्वरूप बताते हुए भेदों को विस्तारपूर्वक समझाइये।
Explain the differences in detail by describing the nature of Dharmya Dhyana.

अथवा / OR

प्र. 3. अवधिज्ञान को परिभाषित करते हुए उसके भेद-प्रभेदों की व्याख्या करें।

Define the Avadhigyan (Clairvoyance) and explain its types and subtypes.

अथवा / OR

मनःपर्यवज्ञान और अवधिज्ञान में अंतर और समानता बताते हुए स्पष्ट करें कि मनःपर्यवज्ञान की मर्यादा क्या है?

Explain the limitation of mind reading while explaining the similarity and dissimilarity between clairvoyance and mind reading.

प्र. 4. जैन दर्शन में प्रमाण के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालें।

Highlight the origin and development of Praman in Jain Philosophy.

अथवा / OR

प्रमाण मीमांसा ग्रन्थ के आधार पर इन्द्रिय और मन का विवेचन करें।

Explain the concept of Sense and Mind as per Praman Mimansa text.

प्र. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए-

Write short notes on any four of the following-

(i) प्रत्यभिज्ञा / Recognition

(ii) प्रामाण्य निश्चय कैसे? / How to determine the validity of Knowledge?

(iii) प्रमेय / Object of Knowledge

(iv) हेतु / Concept of Probans

(v) प्रमाता / Knower

♦♦♦

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

DISTANCE EDUCATION EXAMINATION - 2024

M.A. IN JAINOLOGY AND COMPARATIVE RELIGION & PHILOSOPHY

(PREVIOUS YEAR)

PAPER IV - JAIN EPISTEMOLOGY AND JAIN LOGIC

TIME : 3.00 HOURS **ROLL NO. .....** **MM : 70**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. जैन दर्शन के अनुसार ज्ञान और ज्ञेय की अवधारणा पर प्रकाश डालें।

Throw light on the concept of gyan and gyey according to Jain Philosophy.

अथवा / OR

जैन ज्ञान मीमांसा के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालें।

Throw light on the origin and development of Jain Epistemology.

प्र. 2. नन्दीसूत्र के आधार पर मतिज्ञान का विवेचन करें।

Explain about matigyan as per Nandisutra.

अथवा / OR

श्रुतज्ञान का स्वरूप बताते हुए अक्षर श्रुत और अनक्षर श्रुत का वर्णन करें।

Explain the nature of verbal knowledge and describe alphabetical and non-alphabetical verbal knowledge.